P
393
74
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1535/10M

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 393

891.431 G151G

IMPERIAL RECORD
RECEIVED
30 MAR. 1931
DEPARTMENT

139 138

❀ ओ३म् ❀

गांधी जी का चर्खा

सूचना

प्रथम छपी प्रतियों में अशुद्धियां व भूलें समझ पड़ीं मुख्य भूल तो यह थी कि अपनी भी रचना होते हुये रचयिता मुन्शी नन्दबिहारी लाल के छपाया इस कारण से बाजार में बिकी कुछ प्रतियों के छोड़ कर बाकी सब प्रतियां रद्दी करके शुद्धता पूर्वक फिर से छपवा कर प्रकाशित किया।

प्रकाशक

पन्नालाल वर्मा भजनोपदेशक

प्रयाग।

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम वार } सम्बत १९८७. { मूल्य)॥

891.431
G151G
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 393
Date 9:12:71
GOVT. OF INDIA

गांधी जी का चर्खा

शैर

हे हरी हर रंग में मेरे हो भरा हुब्बे वतन।
खूने रवाँ में जोश हरदम ऐ दिला हुब्बे वतन॥
ख्याल हो तो बस इसी का हो इसी की गुफ़्गू।
दिल से भी नन्दलाल तेरे हो लगा हुब्बे वतन॥

शैर

चित से हिन्दी चाह करके दिल लगा चर्खा चलै।
ढीला रहे हासिद का चर्खा गर तेरा चर्खा चलै॥
जिस तरह चकराय हासिद चाक़ चक्कर दार से।
इस तरह "नन्दलालजी" इस हिन्द का चर्खा चलै॥

गज़ल

करके याद श्री गांधी ने अच्छा संचारा चर्खा,
करैगा ढीला यह जल्दी से अनीति का सारा चर्खा।
चलाते हिन्दी नहिं दृढ़ता से इसी से है हारा चर्खा,
नहिं चक्र के ऐसा इसका चक्कर कष्ट हरन हारा चर्खा।
तनिक दहिल न इसे है दल से लीजै जान करारा चर्खा,
न्यारा करदे अरिहि हिन्द से ऐसा है न्यारा चर्खा।
गहि लिया देश ने तरने खातिर कर से अगर सहारा चर्खा,
तार देय यह सांच जानिये गंग की है धारा चर्खा।
धीर धार के हिन्दीजन ने अगर है कर धारा चर्खा,
कठिन काल का अन्त करैगा नन्दलाल ललकार चर्खा।

शैर

जाये नहीं धन देश का कर ख्याल खद्दर लीजिये।
आये नहीं दालिद्रता हर हाल खद्दर लीजिये॥
अर्थी की इज्जत लेखनी क्या लिख सके ताक़त नहीं।
गर लाश ढकने के लिये नन्दलाल खद्दर लीजिये॥

ग़ज़ल

आयेगा काम गाढ़े में अपनाइये गाढ़ा,
बस अब तो तान हरदम यही गाइये गाढ़ा।
ऐगुल बदनो पास बिदेशी जो गुल बदन,
उसको जला अगिन में मंगवाइये गाढ़ा।
तनज़ेब अब न देगा बिदेशी तनजेब से,
आवाज़ उसके लेने से सिलवाइये गाढ़।
कम ख्वाब में बिदेशी कम ख्वाब अब आये,
सपने में यह कख्वाव कि अब लाइये गाढ़ा।
पछतावो हाथ मल २ जो मलमल लो बिदेशी,
बाहिरी देखाव छोड़ के मंगवाइये गाढ़ा।
नपाक छींट जानो बिलायत की छींट को,
चाहा जो दिल ने छींट तो छपवाइये गाढ़ा।

ग़ज़ल

भारत में भरत महिलाओं चाल चलाओ गाढ़े की,
पति से कहो सारी ललनावों सारी लावो गाढ़े की।
मेरी बात सुन लो माताओं शान दिखाओ गाढ़े की,
धोती रहो रगड़ बरसों तुम धोती मंगावो गाढ़े की।

दामों का कुछ ख्याल न करके मांग बढ़ावो गाढ़े की,
ऊंचा दर्जा चहो जो अपना चादर बनावो गाढ़े की।
बिदेशी वस्त्र में रहो न दबकी फरद छपावो गाढ़े की,
चोली कुरती गाढ़े की अंगिया अगियावो गाढ़े की।
छोड़ ओढ़नी बिदेशी ओढ़नी ओढ़नी रंगवावो गाढ़े की,
नन्दलाल कहैं सब गाढ़ा प्रण कर रागैं गावो गाढ़े की।

शैर

मुद्दोआ बर लाये हक़ कब गांधी महराज का।
एक टक लगा मुंह तक रहा सब गांधी महराज का॥
नन्दलाल जी जल्दी सुनो बिनती करै यह नन्द लाल।
बोल बाला हो हरी अब गांधी महराज का॥

ग़ज़ल

भारत माता की लाज बचा ले काली कमली के ओढ़न वाले।
कृष्ण मुरारी जल्दी से आओ, भारत नइया डूबे बचाओ,
तुम बिन कौन संभाले, काली कमली के ओढ़न वाले ॥१॥
गउवें रुदन दिन रात मचाती, बे गुनाह ये मारी जाती,
खून के बहे हैं पनाले, काली कमली के ओढ़न वाले ॥२॥
वृन्दाबन में गाय चराओ, बंशी की फिर वही तान सुनावो,
गउवों का प्राण बचा ले, काली कमली के ओढ़न वाले ॥३॥
कोई यहां जरदार नहीं हैं, भीषम से सरदार नहीं हैं,
फिर से बिगड़ी को नाथ बनाले, काली कमली के ओ० ॥४॥
फूट की फूली यां फुलवारी, अज्ञानता की छाई अंधियारी
आके "पन्ना" को नाथ सुझा ले, काली कमली के ओढ़न० ॥५॥

गज़ल *

बहिनो मानो तुम बात हमारी, पढ़ो विद्या बनी क्यों गंवारी।
विद्या का जब से पढ़ना छोड़ा, सत कर्मों से मुंह को मोड़ा।
तब से सहती हो दुख तुम भारी, पढ़ो विद्या बनी क्यों गंवारी।
पति की सेवा धर्म तुमारा, उसको है तुमने बिलकुल बिसारा।
फिरती तीर्थों में हो मारी मारी, पढ़ो विद्या बनी क्यों गंवारी।
गाज़ी मियाँ के क़बर पर जाती, जा के वहां पर चादर चढ़ाती।
बुद्धी भ्रष्ट भई है तुम्हारी, पढ़ो विद्या बनी क्यों गंवारी।
पति की सेवा तुम्हें न भाती, देवी पै जाके बकरे कटाती।
बनी फिरती हो काहे हत्यारी, पढ़ो विद्या बनी क्यों गंवारी।
"पन्ना" खड़ा ये बिनय करै है, पति पूजा से नारि तरे है।
कहते वेद औ शास्त्र पुकारी, पढ़ो विद्या बनी क्यों गंवारी।

कजली *

पिया साड़ी हमें लादो नये तार की, खद्दर के बहार की ना।

साड़ी देशी ला दो आप, बिदेशी वस्त्र छूना है पाप, अब तो दिल में यही कर लीना बिचार की, न पहिनब गुलेनार की ना। चोली खद्दर ही की लादो, उसको केसरिया रंगवा दो, अब तो फौज केसरिया देबिन ने तय्यार की, "उमा" से सरदार की ना। चर्खा चलावो घर घर, बचै भारत का मालोज़र, उन्नति होवेगी फिर भारत में व्यापार की, देशी कारोबार की ना। छोड़ो ताड़ी औ शराब, बदबू मैले से खराब, 'पन्नोलाल' कहते बात ये बिचार की, देश के उद्धार की ना। खद्दर के बहार०

कजली

कैसे माने अब जियरा हमार रे सांवलिया।
लुटगा आलस में अपना घर बार रे सांवलिया॥

सब से पहिले भारत माही आकाशी बिमान बना,
सांची जानो अव्वल अव्वल यहीं पै था जलयान बना,
विश्वामित्र ने रख दीना था एक दूजा अस्मान बना,
किसी समय में रहा देश यह हर विद्या की खान बना,
अब तो देखो कहलावैं गंवार रे सांवलिया। लुटगा०

शिल्प कला का यह भारत कहलाता था भंडार कभी,
बढ़ा चढ़ा था इस भारत में कपड़े का व्यापार कभी,
सूत कातते थे भारत में चरखे से नर नार कभी,
बनी आलसी अब तो जनता जो सचेत थी यार कभी,
नष्ट हाथ की भई कताई बनै एको तार रे सांवलिया। लुटगा०

स्वतन्त्रता भई हरन हमारी हुये हैं गुलाम जी,
गया आलस से राज हामारा रहे न हम हुक्काम जी,
लगी गुलामी जोंक के ऐसी रहा हाड़ औ चाम जी,
जान पड़त है ऐसा भाई हुआ काम तमाम जी,
होय के निकम्मे गये हैं अब तो घारो धार रे सांवलिया। लुटगा०

स्वतन्त्र होवैं तो अच्छा है भारत ने यह ठाना है,
आजादी का ठीक है जीवन नहीं बेहतर मर जाना है,
भगा दे आलस अब अपने से तबै देश मरदाना है,
नहीं तो जानै कसर न इसमें उसका नहीं ठिकाना है,
"पन्नालाल" चेतावैं तुमको बारम्बार रे सांवलिया। लुटगा०

———

कजली

नई लहर एक भारत में है चला दिया श्री गांधी ने।
स्वतन्त्र होना सबों के दिल में जमा दिया श्री गांधी ने॥
श्री गांधी ने लिया देख अब दुखी हो भारत मात रही।
अज्ञानता की इस भारत में छाई अंधेरी रात रही॥
पड़े नींद में भारत वासी सुध बुध इनकी जात रही।
फूट भंवर में देश की नइया लोगों चक्कर खात रही॥
प्रेम का बेड़ा लगा के नइया बचा दिया श्री गांधी ने। स्वातन्त्र०

आवाज दिया यह गांधी जोने छाय रहा है जिसको शोर।
क्यों सो रहे हो भारत वासी छाई निद्रा क्यों है घोर॥
उठो बचाओ घर अपना तुम कहना इतना मानो मोर।
चौंक उठे सुन भारतवासीहल्ला होयगा चारो ओर॥
सोये भारत को ग़फ़लत से जगा दिया श्री गांधी ने। स्वातन्त्र०

तुरत अहिंसा बिगुल बजा के सबों को फिर हुशियार किया।
उठो २ भारत के बच्चो माता जी ने पुकार किया॥
बना बना के सेना पति फिर देशी दल तैय्यार किया।
सत्याग्रह संग्राम छेड़ के सुनो चकित संसार किया॥
क़िला नमक कानून तोड़ के गिरा दिया श्री गांधी ने। स्वातन्त्र०

चरखा चक्र उठा गांधी ने लोगों खूब चलाया है।
बड़े बड़ों का दिमाग़ घूमा ऐसा उसे घुमाया है॥
मैनचेष्टर औ लंकाशायर दोनों का दिल दहलाया है।
रैली भी लाचार है इससे दिल में दहशत खाया है॥
इसे चलाना भूल गये थे बता दिया श्री गांधी ने। स्वातन्त्र०
उठ बैठो अब आखें खोलो सम्हल जाव भारत के बीर।
भारत मां के हित साधन में अब अर्पण तुम करो शरीर॥

हरएक हुनर के पण्डित होवो करै गुलामी की जंजीर ।
मुख उज्ज्वल हो भारत मां का बहुत दिनों तक रही अधीर ॥
"पन्नालाल" कहें धीरज मां को बंधा दिया श्रीगांधी ने । स्वातन्त्र०

चर्खे वाले ने

दुनिया में चरखे का जलवा दिखला दिया चरखे वाले ने,
हर जगह तिरंगे झन्डे को फहरा दिया चरखे वाले ने ।
आलस की मदिरा पी २ कर मदहोश थे भारतवासी सब,
फिर असहयोग का शंख बजा जगवा दिया चरखे वाले ने ।
घनघोर घटा इस भारत में जब देखा गुलामी की छाई,
एक बिजुली फिर आजादी की चमका दिया चरखे वाले ने ।
पहिने थे जो कि हैट कोट खद्दर से नफरत करते थे,
सर उनके खद्दर की पहिना दिया चरखे वाले ने ।
रोते हैं मल २ हाथ को अब मलमल औ आबे रवां वाले,
मैनचेष्टर लंका शायर को दहला दिया चरखे वाले ने ।
उड़ गये होश अब उन सब के हो गया दिवाला रैली का,
खाते थे यां का धन जो लूट बचवा दिया चरखे वाले ने ।
शराब भी अब बेआब हुई आबकारी का फाटक बन्द पड़ा,
ताड़ी की नारी ढील हुई कटवा दिया चरखे वाले ने ।
बलिदान तु कर ऐ 'पन्नालाल' बलि वेदी पर हंसते हंसते,
आदर्श चरित्र बन कर सब को जतला दिया चरखे वाले ने ।

राजा प्रेस, प्रयाग ।